अंतराल

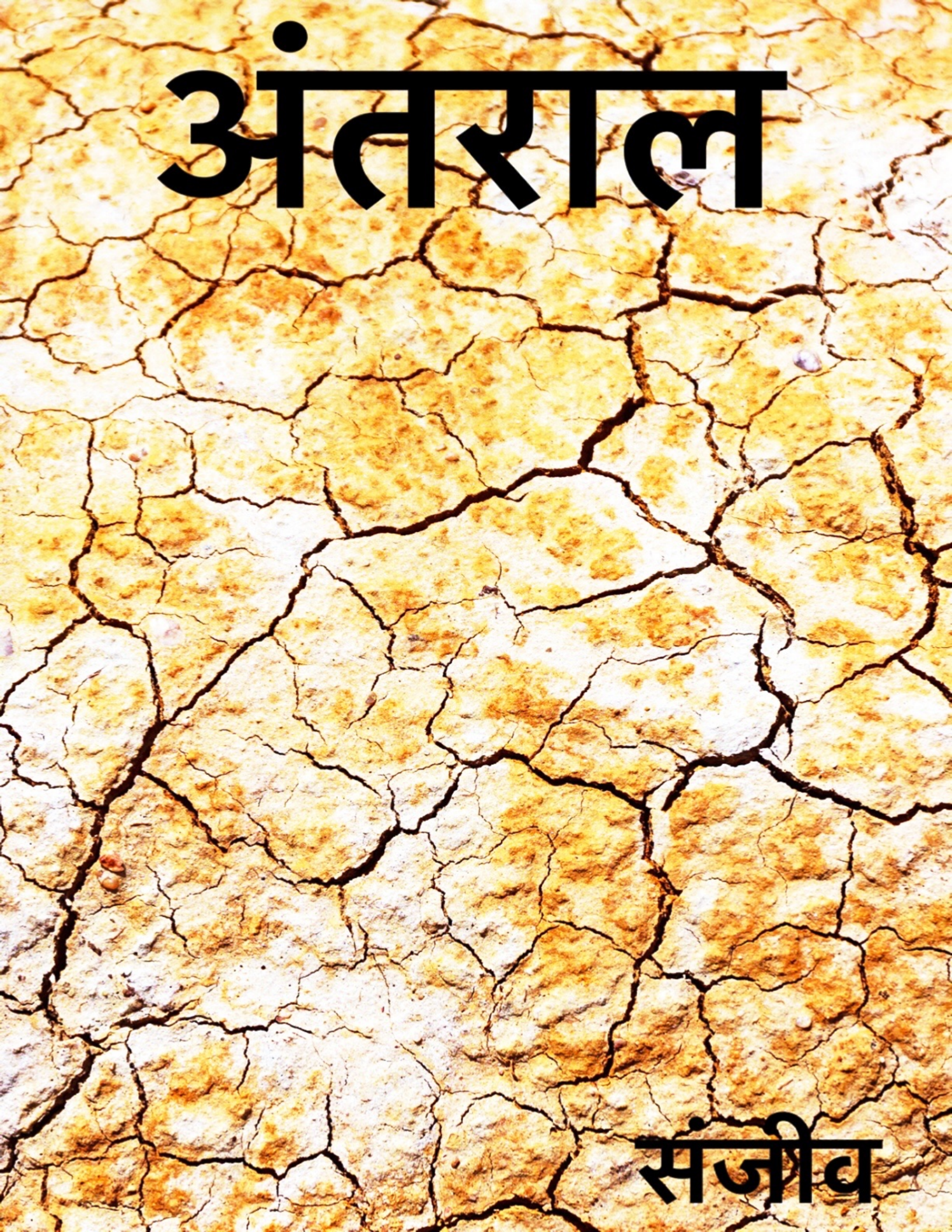

संजीव

अन्तराल

संजीव

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: अप्रैल, 2019

© संजीव

"बूझो तो वह कौन है!" मामी की तर्जनी जादू की छड़ी की तरह उस लड़की की ओर तनी हुई थी जो कई हमजोली सहेलियों के साथ सिन्दूरी झाँई वाले पीले अमरूदों का मोलभाव कर रही थी। जैसी लड़की, वैसे अमरूद! गजब का मैच! 'वह पहली ही नजर में फिदा हो गया था। जाने क्या हुआ वे अमरूद की दुकान- से भरभराकर भागीं और जा धमकीं कंघी- चोटी- फीता- आलता की दुकान पर।

'लो, नजर लग गई न तुम्हारी!"

"अरे, यही तो है वह लड़की, जो तुम्हारी लड़ाका माँ और चुगलखोर बहन को ठीक करने तुम्हारे घर आने वाली है! नहीं पहचान पाए न? पहचानोगे भी कैसे भानजे, विवाह के बखत तो तुम्हें धोती भी बाँधनी नहीं आती थी।"

उसका कलेजा जोरों से धड़कने लगा था। मामी ने लगे हाथों और भी जरूरी जानकारियाँ दे डाली थीं, जैसे यह कि उसकी माँ गवने के लिए चिंतित है कि उसने सात मंगलवार का व्रत रखा है, आज पहला है, कि उसका गांव यहां से डेढ़ मील की दूरी पर है, कि वह चाहे तो...। आगे अपनी ही बात पर उसे चिकोटी काटकर मामी खिलखिलाती हुई जा बैठी थीं इक्के पर।

मामी तो चली गई मगर चिकोटी की करक छोड़ गई। कॉलेज में इस वक्त केमिस्ट्री का क्लास होगा। ऊँह, हुआ करे। पहला धावा उसने अमरूदों की दुकान पर किया, मायूस हुआ, सिन्दूरी झाँई के सारे अमरूद बिक चुके थे। दूसरा धावा कंघी-

चोटी की दुकानों पर। वहाँ बस चोटियाँ और चोलियाँ लटक रही थीं, बिन्दियाँ पड़ी थीं, फीते पड़े थे, इयररिंग पड़े थे जैसे अपने सारे आभूषण और परिधान उतारकर सुन्दरियाँ अशरीरी आत्मा की तरह छू मन्तर हो गई थीं। दूर-दूर तक कहीं नहीं हैं। अब यों उनसे मिलने के लिए उनके पुनर्जन्म तक प्रतीक्षा करनी होगी-पुनर्जन्म जो अगले मंगलवार को होना है। शुक्र है, बिजेथुआ का यह मेला सात दिन में लगा करता है।

दूसरे मंगलवार को 'जो ये पढ़े हनुमान चालीसा, होय सिद्ध साखी गौरीसा।' का पूरा हनुमान चालीसा कई-कई बार जाप करने के बाद 'संकटमोचन नाम तिहारो' जप रहा था तभी उसनें दर्शनार्थियों की भीड़ में टकराती-जूझती औरतों के बीच उसे पहचान लिया। उसका वश चलता तो मार-मारकर एक-एक धक्के, देने वाले को मकरीकुंड में फेंक आता लेकिन वह जुए में पिटे पाण्डवों की स्थिति में से एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सका, उसकी द्रौपदी खुद भीड़ से नुंची-चुंथी बाहर आई थी।

"कुछ साले सिर्फ औरतों को धक्का देने यहाँ आते हैं। शरीफ लड़कियों को यहाँ नहीं आना चाहिए।" उसने अंधेरे में तीर चलाए। लड़कियों के उस दल ने अपने इस लचर और लाचार मसीहा को देखा और उसकी मातमपुर्सी में निःशब्द सिर झुकाए आगे बढ़ गई।

"धत्तेरे की!" वह खीझ गया। एक तो वह प्रेम के मामले में बिल्कुल कोरा, दूजे लड़की ठहरी गँवारू। वह झींक ही रहा था कि तभी उसके अन्दर के किसी सजीले